www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 51
सृष्टि संवत् 1960853117
19 मार्च, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 51, 16-19 मार्च 2017 तदनुसार 6 चैत्र सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

उठो, ऐश्वर्य का भाग देखो

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदि श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन।।

-अथर्व० ७।७२।।

शब्दार्थ-उत्तिष्ठत = उठो और **इन्द्रस्य** = ऐश्वर्य के **ऋत्वियम्** = व्यवस्थित **भागम्** = भाग को **अवपश्यत** = देखो **यदि** = यदि वह **श्रातम्** = पक चुका है, तो **जुहोतन** = होम दो और **यदि** = यदि **अश्रातम्** = नहीं पका है, तो भी **ममत्तन** = मस्त होवो।

व्याख्या-वेद में समाज की जो कल्पना है, वह अत्यन्त उदात्त है। वेद आदेश करता है कि समाज समृद्ध, पुष्ट, धन-धान्य से भरपूर होना चाहिए। इसीलिए वेद कहता है-'**उत्तिष्ठत**' = तुम सब उठो। यहाँ 'उत्तिष्ठ' [तू उठ] नहीं कहा। वरन् '**उत्तिष्ठत**' [तुम सब उठो] कहा है। समाज में कोई एकाध उन्नत हो, शेष हों अवनत परिस्थिति में, तो समाज अवनत और अशान्त ही रहेगा, अत: 'तुम सब उठो' आदेश हुआ है। उठकर क्या करें-'**अवपश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्**' = ऐश्वर्य के व्यवस्थित भाग को देखो। उपनिषत् ने इस पूर्वार्ध का सुन्दर शब्दों में अनुवाद किया है-'**उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत**'-[कठो० १।३।१४] उठो, जागो और श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करके होश में आओ। उपनिषत् ने कहा-'**प्राप्य वरान्निबोधत**' [श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करके होश में आओ] वेद कहता है-'**अवपश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्**' [ऐश्वर्य के व्यवस्थित भाग को देखो]। 'वर-पदार्थ' और 'ऐश्वर्य के व्यवस्थित भाग' में कोई अन्तर नहीं है। 'अवपश्यत' का अर्थ है-'गहरी दृष्टि से देखो।' 'निबोधत का अर्थ है-'समझो, होश में आओ'। दोनों के भाव में समानता है।

'उपनिषत्' का 'वर' = श्रेष्ठ पदार्थ बहुत सुन्दर है, किन्तु वेद का 'ऋत्वियं भागम्' = व्यवस्थित भाग बहुत महत्त्व का है। सृष्टि के पदार्थों में सबका भाग है-किसी का थोड़ा, किसी का अधिक। यह थोड़ा या अधिक अन्धाधुन्ध विभाजन पर अवलम्बित नहीं, वरन्, जिसने जैसी कमाई की है, उसके अनुसार व्यवस्थित है। वेद ने इस व्यवस्थित भाग की बात कहकर इसके प्राप्त करने के उपाय का भी निर्देश किया है, अर्थात् जैसे कर्म करोगे, सृष्टि के पदार्थों में भला या बुरा, अधिक या अल्प वैसा ही तुम्हारा भाग रहेगा। उसमें घटाबढ़ी करने का अधिकार किसी को नहीं है।

वेद ने, उत्तरार्ध में ऐसी बात कही है जिस पर बलिहार होने को जी चाहता है-'**यदि श्रातं जुहोतन**' = यदि पका है तो होम कर दो, अर्थात् ऐश्वर्य की पराकाष्ठा पर पहुँचकर उसे होम-'**इदन्न मम**' [यह मेरा नहीं] कहकर भगवान् की राह में दे डालो। धन के त्याग में सुख है, संग्रह में दु:ख है। और '**यद्यश्रातं ममत्तन**' यदि कच्चा हो तो मस्त हो जाओ। कच्चे पर दु:ख मानने का अधिकार नहीं है। पक्के को रखने का अधिकार नहीं, कच्चे पर शोक करने का नहीं। इसे कहते हैं-हानि-लाभ में समता। वेद ऐश्वर्य दिलाकर भी शान्त रखना चाहता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

आर्य समाज होशियारपुर में ऋषिबोधोत्सव मनाया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 26-02-2017 (रविवार) को ऋषिबोधोत्सव का पर्व मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। नगर के आर्य परिवार से श्री केशव धीर और उनकी पत्नी श्रीमती सरोज धीर ने यज्ञपद को सुशोभित किया। इस अवसर पर नगर से पधारे आर्यजनों ने हवन में आहुतियां डाली। आचार्य भद्र सेन ने यजमानों को आशीर्वाद दिया और उपस्थित आर्यजनों को बढ़ चढ़ कर उत्सव में भाग लेने पर बधाई दी।

तत्पश्चात् दयानन्द हाल में कार्यक्रम चला। श्रीमती बिमला भाटिया और लंदन (इंग्लैंड) से पधारे श्रीमती ऊषा मायर ने ऋषि के जीवन से विशेष घटनाओं को गाकर सुनाया। मंच का संचालन करते हुए प्रो० यशपाल वालिया ने स्वामी जी को नमन किया और कहा कि बालक मूल शंकर ने सच्चे शिव को पाने का मन बना लिया था और रास्ते में आई बाधाओं को पार करते हुए अध्यात्म को जगाया। समय रहते हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताये हुए सत्य के पथ पर चलते रहने का संकल्प लेना चाहिये, अत: आज बोधउत्सव का यह पर्व संकल्प दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रचार मन्त्री डा० प्रो० प्रेम नाथ चोपड़ा ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में शुभ संस्कारों को जीवन में अपनाने पर जोर दिया। ऋषिबोध की गहराई में जाते हुए उन्होंने कहा कि कल भी और आज भी ऋषि दयानन्द द्वारा दर्शाया गया जीवन पथ समूची मानवता के लिये एक प्रकाश सतम्भ है जिसके आलोक में बुराइयों को छोड़कर मानव अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। उन्होंने आगे कहा कि बोधोत्सव का मर्म यह है कि वे एक सच्चे समाज सुधारक और क्रांतिकारी के रूप में समय के पहल पर उतरे और वे अपनी कहानी कह गये, यदि वे लंबा जीवन जी जाते तो समाज का कायाकल्प ही हो जाता। आइये, इस बोध उत्सव पर संकल्प लें कि शुभ संस्कारों से परिपूर्ण जीवन को बिताते हुए शुद्ध बुद्ध हो जाए। अंत में शांति पाठ के पश्चात् उपस्थित आर्यजनों ने ऋषि प्रसाद का आनंद माना।

-एन. के. शर्मा प्रधान

www.thearyasamaj.org

सुगृहिणी : परिवार का सर्वोच्च सौभाग्य

ले. -डॉ० वसुन्धरा रिहानी ऐसोसिएट प्रोफेसर (रिटायर्ड) पंजाब वि. वि. 1617, सैक्टर 44-बी, चण्डीगढ़

गृहिणी नहीं 'सुगृहिणी', कृति नहीं 'सुकृति', मति नहीं 'सुमति', गन्ध नहीं 'सुगन्ध', मधुर नहीं 'सुमधुर', स्पष्ट नहीं 'सुस्पष्ट'- ऐसे कितने ही और शब्द आपको मिल जाएंगे जिनके आगे श्रेष्ठतावाची 'सु' प्रत्यय लगाने से इन शब्दों के अर्थ में एक चमत्कारपूर्ण दिव्यता आ जाती है। इसी 'सु' प्रत्यय का प्रयोग इस लेख के शीर्षक में करके गृहस्थाश्रम की आधारशिला 'गृहिणी' की सर्व-विदित और व्यावहारिक विशेषताओं पर वैदिक दृष्टि से कुछ चिन्तन और मनन करने का प्रयास अपेक्षित है। ऋष्विर मनु का कथन है-

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व जन्तवः।

तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमः।।

-मनुस्मृति 3.77

अर्थात् जैसे वायु का आश्रय पाकर सभी प्राणी जीवन ग्रहण करते हैं उसी प्रकार शेष सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर अवलम्बित हैं। इससे अगले श्लोक में वे कहते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि गृहस्थ के अतिरिक्त तीनों आश्रम गृहस्थी द्वारा नित्यप्रति ज्ञान और अन्नदान से उपकृत किए जाते हैं। अतः गृहस्थ आश्रम ही ज्येष्ठ व श्रेष्ठ आश्रम है।

गृहस्थाश्रम की मौलिक इकाई पुरुष और स्त्री का युग्म (जोड़ा) है। वास्तव में जहां जो भी निर्माण हो रहा है वह किन्हीं दो शक्तियों का ही जोड़ है। सृष्टि की मूल इकाई परमाणु में भी 'इलैक्ट्रोन' और 'प्रोटोन' ये दो शक्तियां वैज्ञानिकों को प्रतीत हुई हैं। ये दोनों शक्तियाँ 'ऋत' और 'सत्य' के रूप में हैं। 'सत्य' प्रोटोन रूप से केन्द्र में स्थित है तो 'ऋत' गतिशील होने से 'इलैक्ट्रोन' है। (द्रष्टव्य, वैदिक सम्पदा, पं. वीरसेन वेदश्रमी, पृ. 124) सम्भवतः वेद में भी 'ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्त तपसोऽध्यजायत (ऋग्वेद 10.190.1) कहकर सृष्टि उत्पत्ति की मूलभूत शक्ति 'ऋत' और 'सत्य' को ही बतलाया गया है। यह युग्म स्थिति जड़ से चेतन तक और छोटे से बड़े तक अनेक रूपों में विद्यमान है। जैसे:-द्यावा और पृथिवी, सूर्य और चन्द्र, प्राण और अपान, ब्रह्म और क्षत्र इत्यादि। इन्हीं शक्तियों का सर्वांग सुन्दर, पूर्ण और अन्तिम रूप पुरुष और स्त्री अथवा नर और नारी में विकसित होता है।'

गृहस्थ जीवन आरम्भ करने के लिए स्त्री और पुरुष अर्थात् वर और वधू को उस एक इकाई में बंधना होता है जो कि तप, त्याग, उदारचित्तता एवं संयमपूर्ण जीवन बिताने के लिए कृतनिश्चयी होते हैं। वेद, वैदिक साहित्य और हमारे अन्य शास्त्रों में पति-पत्नी के पारस्परिक व्यवहार और उनकी परिवार के अन्य सदस्यों, समाज व राष्ट्र के प्रति संवेदनशील भावनाओं व कर्त्तव्यों का बहुत ही मार्मिक व सजीव चित्रण किया गया है। उदाहरगार्थ निम्न मन्त्र-

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।

मया पत्या प्रजावति सञ्जीव शरदः शतम्।।

-अथर्ववेद 10.1.52

में पति की भावनाएं पत्नी के प्रति कैसी होनी चाहिएं, यह दर्शाते हुए कहा गया है कि यह पत्नी मेरे द्वारा पालित-पोषित हो, हे सन्तानों वाली ! तू मुझ पति के साथ सम्यक् जीवन व्यतीत कर और सौ वर्षों तक जीवित रह। इसी भाँति अथर्ववेद (14.1.23,24) में विवाह के समय वधू को आशीर्वाद देते हुए कहा गया है कि-हे वधू ! जैसे महान् समुद्र नदियों को अपना साम्राज्य दे देता है वैसे ही पतिगृह में तुझे रानी/महारानी का पद प्राप्त हो। तू सास ससुर, देवरों और ननदों की दृष्टि में सदा सम्राज्ञी बनकर रहे।

यहां एक वधू को जो पत्नी बनकर गृहिणी की संज्ञा से जानी जाती है, को पति कुल की सम्राज्ञी कहा गया है। सम्राज्ञी बनने का अभिप्राय अधिकार जताने, अंकुश लगाने, अपनी मनमानी करने या प्रताड़ना देने से नहीं ; परन्तु कर्त्तव्य और प्रेम के आधार पर अपने सद्गुणों से सबका मन अपने वश में कर लेने से है, क्योंकि अधिकार के शासन में आए दिन विद्रोह होते रहते हैं और सत्ताधीशों को पदच्युत होते देर नहीं लगती। इसके विपरीत कर्त्तव्य पालन, प्रेम, उदारता, त्याग व सेवा के आधार पर बनाए हुए शासन की नींव बहुत गहरी होती है और शासित स्वेच्छा-पूर्ण स्नेह बन्धन में बँधे रहते हैं ; उनसे छूटने की इच्छा करना तो दूर, पकड़ में तनिक सी शिथिलता आते देखकर भी तिलमिलाने लगते हैं। यह शासन ऐसा है जैसे माता के आधिपत्य में रहने से बालक कभी इन्कार नहीं करता। प्रताड़ना देने पर भी वह उसी से लिपटता है और उपेक्षा देखकर उदास हो जाता है। एक सुगृहिणी का शासन भी स्वेच्छा और समर्पण पर आधारित होता है। यहाँ एक और बात भी ध्यान देने योग्य है कि अधिकार और कर्त्तव्य का सम्बन्ध चोली दामन का सम्बन्ध होता है। व्यक्ति के अधिकारों की स्वच्छ-न्दता को कर्त्तव्यों की लगाम ही साधती है।

जी हाँ, अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों में पूर्ण तालमेल रखते हुए एक गृहिणी, नहीं नहीं एक 'सुगृहिणी' मात्र पति को ही नहीं अपितु उसके पूरे परिवार को अपने सद्भाव बन्धन में बाँध लेती है और बदले में सभी सघन सौजन्य प्राप्त करती है। यह सब किसी जादू या अधिकार के आधार पर नहीं होता मगर उसके अपने तप, त्याग, स्नेह, दूरदर्शिता, योग्यता, कौशल, व्यवस्था, सेवा भाव आदि से ही संभव होता है। इस स्तर की 'सुगृहिणी' जिस घर में हो उस घर परिवार के सौभाग्य का सूर्योदय हुआ ही समझना चाहिए।

'ईशानः वधं यवयः' (ऋग्वेद 1.2.5) और 'त्वं नो मेधे प्रथमा' (अथर्ववेद 6.108.1) मंत्रांशों में कहा गया है कि मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता स्वयं ही होता है और सुबुद्धि संसार में सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। जिस गृहिणी ने परिस्थिति को समझते हुए सुमति से अपनी विचारधारा को शुद्ध पवित्र कर लिया हो उसने मानो सब कुछ प्राप्त कर लिया। अतः स्पष्ट है कि एक गृहिणी को 'सुगृहिणी' का पद प्राप्त करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। आत्मोन्नति का यही एकमात्र रास्ता है। इसके अतिरिक्त एक गृहिणी को मनचाहा सम्मान व प्रतिष्ठा पाने के लिए कतिपय विशिष्ट गुणों को अर्जन करने में सदैव कार्यरत रहना चाहिए। वेद में 'सुगृहिणी' की विशेषताओं की ओर संकेत करने वाले कुछ शब्द पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। वेद में नारी (गृहिणी, सुगृहिणी) के लिए कहा गया है कि यह-

अदितिः (यजुर्वेद 8.43) असीम क्षमता वाली है। वह अस्वसूनृता (सामवेद पूर्वार्चिक 1741) प्रिय शब्द करने वाली है। वह निर्ऋतिः (यजुर्वेद 12.65) सत्याचरण से युक्त है। वह प्रतरणी (अथर्ववेद 14.2.26) जीवन की पतवार है। वह स्वौपशा (यजुर्वेद 11.59) स्वादिष्ट भोजन बनाने वाली है। वाजिनीवती (यजुर्वेद 34.33) वह कर्मठ है। वह सुमंगली (अथर्ववेद 14.2.26) मंगल आचरण करने वाली है। वह स्योना (यजुर्वेद 10.26) सुखरूपा है। वह रास्ना (यजुर्वेद 38.3) दानशीला है। वह व्यचस्वती (ऋग्वेद 2.3.5) समस्त गुणों से व्यापक है, इत्यादि। एक 'सुगृहिणी' के लिए वेद ने अत्युत्तम मार्ग प्रशस्त किया है और उसे ऐसे ऐसे तथा अन्य विशिष्ट गुणों को प्रयत्नपूर्वक धारण करने का प्रयास करना चाहिए ताकि वह परिवार व समाज के लिए सुख और खुशी का स्रोत बन सके। हाँ, एक यथार्थ यह भी है कि ऐसी गृहिणी अथवा सुगृहिणी कहीं से बनी बनाई नहीं मिलती अपितु बनाई जाती है। पितृगृह से संस्कार लेकर आने वाली वधू ससुराल के वातावरण के साथ अपना समन्वय करती है, इससे उसका नया व्यक्तित्व बनता है। योगदान उसके पति का रहता है जो उसे पूर्ण विश्वास, आश्वासन, स्नेह और सहयोग प्रदान करता है और उसके स्वभाव और क्रियाकलाप को उच्च स्तरीय ढाँचे में ढालने के लिये सहायता करता है। इसके साथ-साथ उसके सास, ससुर, जेठ, देवर, ननद आदि सभी की महत्त्वपूर्ण साझेदारी होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

आनन्द और उत्साह का पर्व - होली

संसार के सभी मनुष्यों, सम्प्रदायों, जातियों और राष्ट्रों में कुछ ऐसे विशेष नियत दिन हैं जिन पर वे अपने विशेष मनोभावों के द्योतनार्थ विशेष कृत्य करते हुए देखे जाते हैं। इन विशेष अवसरों पर किए जाने वाले वाले कृत्यों को ही पर्व या त्यौहार कहा जाता है। आर्यों का कोई नित्य या नैमित्तिक कर्म ऐसा नहीं मिलेगा, जिसमें धर्म का सम्पर्क न हो। नित्य के कर्मों में सारी दिनचर्या और रात्रिचर्या का धर्मरूप से ही उपदेश दिया गया है। प्रात:काल उठने, शौच, स्नान, सन्ध्योपासना, आपस के परस्पर व्यापार और भोजन करने से लेकर रात्रि के शयन तक सब कुछ धर्म के नाम से ही बतलाया गया है। इसलिए आर्यों के नैमित्तिक कर्म पर्व या त्यौहार भी धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं, यही आर्य जाति के पर्वों की विशेषता है। ऐसे ही पर्वों में एक पर्व होली है। हमारे देश में अन्य पर्वों की तरह होली का पर्व भी आनन्द और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी छोटे बडे आपसी मतभेदों को भूलकर एक-दूसरे के गले लगते हैं। होली का त्यौहार भारत के सभी प्रान्तों में मनाया जाता है। इस पर्व पर लोग ऊंच नीच , छोटे-बडे का विचार छोड कर स्वच्छ हृदय से आपस में मिलते हैं। यदि किसी कारणवश वर्ष में वैर विरोध ने मनों को अपना आवास बना लिया है तो उसको अग्निदेव की साक्षी में भस्मसात् कर दिया जाता है। अत: होली प्रेमसार का पर्व है। यह दो हृदयों को मिलाती है, एकता का पाठ पढ़ाती है। यह वर्ष भर प्रेम में तन्मय हो जाने का सबसे उत्तम साधक है। आज घर-घर मेल मिलाप है, घर-घर वर्ष भर के वैरी एक दूसरे को गले लगाकर फिर भाई-भाई बन जाते हैं। इस पर्व पर बाल वृद्ध वनिताओं की उल्लास भरी उमंगें कलह क्लेश और द्वेष भाव के विचारों का विलोप कर देती हैं। होली के शुभ अवसर पर भारत में हर्ष की कल्लोल - मालाएं उठती हैं। यह पर्व प्रत्येक हिन्दु के घर भारतवर्ष में समान रूप से मनाया जाता है। होली का पवित्र पर्व वस्तुत: आनन्द और उल्लास का महोत्सव है, परन्तु समय के साथ-साथ इस पर्व के साथ भी अनाचार और अभद्र दृश्यों का समावेश हो गया। आजकल जिस प्रकार से हमारे हिन्दु भाई होली का त्यौहार मनाते हैं उसको देखकर क्या कोई बुद्धिमान, धार्मिक पुरूष यह मान सकता है कि यह होली जिसको देखकर शिक्षित और सज्जन विदेशी लोग हमें नीमवहशी का खिताब देते हैं। हमारे उन्हीं पूर्वजों की चलाई हुई हो सकती है जिनकी विद्या और बुद्धि को देखकर सारा संसार विस्मित है और जिनके रचित गन्थों और शिल्प निर्माणों को देखकर क्या स्वदेशी क्या विदेशी सभी सहस्र मुख से उनकी उच्च सभ्यता की प्रशंसा करते हैं। क्या आजकल होली का फूहड़ नृत्य, अश्लील शब्दों का उच्चारण हमारे उन ऋषियों और ब्राह्मणों का चलाया हो सकता है जिनके सिद्धान्त में मन में भी ऐसे अश्लील और जघन्य विचारों का सोचना तक पाप समझा जा सकता है। क्या आजकल की होली में स्त्रियों के साथ होली खेलना, रासलीला जैसे नृत्य करना उन आर्य पुरूषों का चलाया हो सकता है जो पराई स्त्री को माता के समान समझते थे और उनको प्रणाम करते हुए उनके चरणों को छोड़कर अन्य अंगों पर दृष्टिपात तक करना पाप समझते थे। रामायण में एक दृश्य आता है कि जब माता सीता को रावण चुरा ले गया था, तब वे विलाप करती हुई अपने आभूषण और चीर मार्ग में फैंकती गई थी। ये आभूषण एक पोटली में बन्धे हुए सुग्रीव के महामन्त्री हनुमान ने उठाए थे। उन्होंने इस आशा से फैंक दिए थे कि सम्भव है ये राम को मेरा वृतान्त बता सके। जब सुग्रीव और राम की मित्रता हुई तो सुग्रीव ने उन आभूषणों को राम के समक्ष प्रस्तुत किया, उस समय शोक संतप्त राम ने अपने प्रिय भाई लक्ष्मण से पूछा कि देखो क्या ये आभूषण तुम्हारी भाभी के ही हैं? उस समय यतिवर लक्ष्मण के उत्तर को आदि कवि वाल्मीकि इस प्रकार वर्णन करते हैं-

नाहं जानामि केयुरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे तु अभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

आजकल होली के त्यौहार में जिस प्रकार के अश्लील दृश्य देखने को मिलते हैं, उससे अनेक प्रकार की कुरीतियां समाज के अन्दर फैल रही हैं। पर्वों को उत्साह के साथ मनाना अच्छा है परन्तु उसके साथ जब अश्लीलता जुड़ जाती हैं तो पर्वों का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। होली का त्यौहार भी ऐसा ही है जिसमें समय के साथ-साथ अनेक प्रकार की काल्पनिक घटनाओं, अश्लील नृत्यों को जोड़ दिया गया। आजकल होली में जो मद्या, भांग आदि पीकर उन्मत होकर बुद्धि जैसे उत्तम और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देने वाले पदार्थ का नाश करके ईश्वर के अपराधी बनते हैं, उनसे बढ़कर और कौन पाप का भागी बन सकता है? इसलिए ऐसे जघन्य कृत्य करके हमें पर्वों की पवित्रता और मर्यादाओं को भंग नहीं करना चाहिए।

इस आधुनिक रंग बिखेरने और गुलाल उड़ाने की कुप्रथा का मूल प्राचीन काल में यह प्रतीत होता है कि पुराने भारतवासी इस आमोद-प्रमोद के पर्व पर कुसुमसार आदि सुगन्धित द्रव्यों को परस्पर उपहार के रूप में व्यवहार में लाते थे। सम्भव है कि सम्मिलित बन्धु-बान्धवों के द्वारा उसे एक दूसरे के ऊपर छिडका जाता हो। परन्तु वर्तमान के रंग डालने के जो दृश्य देखने को मिलते हैं उसमें उन प्राचीन भावनाओं का कोई समावेश नहीं दिखाई देता।

पौराणिकों में होली के उत्सव के विषय में यह कथा प्रचलित है कि इस अवसर पर अत्याचारी दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने अपने ईश्वर प्रेमी पुत्र प्रह्लाद के सजीव दाह के लिए अपनी मायाविनी बहन होलिका द्वारा चिता रचवाई थी। उसने सोचा था कि होलिका अपनी राक्षसी माया से प्रह्लाद को जलाकर आप चिता से सुरक्षित निकल आएगी। किन्तु परमात्मा की असीम कृपा के कारण भक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं हुआ और राक्षसी होलिका उस चिता में जलकर राख हो गई और उसी दिन से होलिका दाह और प्रह्लाद के सुरक्षित रहने के उपलक्ष्य में होलिकोत्सव प्रचलित हुआ। इस पौराणिक दन्त कथा से भी हम सत्य दृढ़ता वा सत्याग्रह की शिक्षा ले सकते हैं।

अत: होली का पर्व हमें सभी वैर, द्वेष, आदि बुरी भावनाओं को समाप्त करके आपस में मिलने का सन्देश देता है। हमें अपने ऋषियों, मुनियों तथा महापुरूषों के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर अपने पर्वों को शुद्ध स्वरूप में मनाना चाहिए। समय के साथ-साथ इस पर्व के साथ अश्लीलता के जो दृश्य जोड़ दिए गए हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करें। होली का त्यौहार हमें प्रेरणा देता है कि जो हो ली अर्थात् जो बीत गई है उसे भुलाकर हम अपने नए जीवन का प्रारम्भ करें। अपने मन के छल कपट, द्वेष आदि भावनाओं को दूर करके सबके साथ गले मिलना चाहिए। समाज में पर्वों, त्यौहारों के नाम पर जो बुराईयां और अश्लीलता फैल रही है, उसे दूर करके पर्वों की शुद्धता और मर्यादा को बनाए रखना हम सबका कर्त्तव्य है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

भारत के गौरवशाली इतिहास की कुछ घटनाएँ

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

वैसे तो भारत का गौरवशाली इतिहास आदर्श, नैतिक, शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक व संवेदनशील घटनाओं से भरा पड़ा है, परन्तु यहाँ पर कुछ घटनाओं का संक्षिप्त विवरण करते हैं, वह इसी भाँति है-१. जब मेघनाथ के शक्तिवाण से लक्ष्मण बेहोश हो गया था, तब श्री राम ने हनुमान जी को लंका में भेज कर सुषेण वैद्य को बुला लिया। श्री राम ने वैद्य से कहा कि वैद्य जी आप मेरे छोटे भाई लक्ष्मण को किसी प्रकार से भी ठीक कर दीजिये, नहीं तो मेरा जीवित रहना भी मुश्किल है। तब सुषैण ने कहा "श्रीराम ! मैं तो रावण का वैद्य हूँ", उनके शत्रु को मैं दवा कैसे दे सकता हूँ। तब श्री राम ने कहा कि वैद्य जी ! आप बिल्कुल सही बोल रहे हैं, आप अपना कर्त्तव्य पूरा करो। ईश्वर जो करेगा सो ठीक ही करेगा। यह सुन कर वैध ने कहा कि हे श्री राम ! मैं तो आपकी परीक्षा ले रहा था कि श्रीराम कितने धैर्यशाली है। मैं वैद्य हूँ मेरा कर्त्तव्य मरीज की सेवा करना है, चाहे वह कोई भी हो, सो मैं लक्ष्मण को जीवित करके ही रहूँगा। यह है अपने-अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा का उच्चतम् उदाहरण।

२. जब मेघनाथ के शक्तिवाण के लगने से लक्ष्मण मुर्छित हो गये तब लंका के वैद्य के कहने से हनुमान जी हिमालय पर्वत से संजीवनी बूटी लाये जिससे लक्ष्मण की बेहोशी खुली और कुछ चेत में आये तब सुग्रीव ने लक्ष्मण से पूछा कि आपको चोट कहाँ लगी है और दर्द कहाँ हो रहा है, तब जो लक्ष्मण ने उत्तर दिया वह भाईयों के प्रेम की पराकाष्ठा है। लक्ष्मण ने कहा कि चोट मुझे कहाँ लगी है, यह तो मैं बता सकता हूँ पर दर्द कहाँ हो रहा है, यह तो भाई श्री राम ही बता सकते हैं।

३. जब राम और लक्ष्मण, सीता की खोज में जंगल में भटक रहे थे, तब वे घूमते-घूमते सुमेरू पर्वत के पास पहुँचे, जिसके ऊपर सुग्रीव जी व हनुमान जी बैठे हुए थे। राम और लक्ष्मण को बनवासी भेष में देखकर सुग्रीव ने समझा कि ये कहीं भाईबाली के गुप्तचर तो नहीं हैं जो मेरी खोजकर रहे हो, तब सुग्रीव ने हनुमान जी को पता लगाने के लिए नीचे भेजा। हनुमान जी ने पर्वत से नीचे उतरकर, उनसे इतने सुन्दर ढंग से बात की जिसमें व्याकरण की कोई अशुद्धि नहीं थी और विद्वता पूर्ण ढंग से उनसे वार्त्तालाप किया, तब राम ने लक्ष्मण की ओर संकेत करके कहा कि ऐ लक्ष्मण ! यह व्यक्ति यानि हनुमान जी चारों वेदों का विद्वान दिखाई पड़ता है कारण उसने हम से कितनी देर तक वार्त्तालाप किया पर कहीं पर भी व्याकरण की गलती नहीं की और बहुत ही मधुर भाषा में शिष्टता से बातें की। इससे हमें हनुमान जी एक उच्च कोटि के विद्वान् जान पड़ते है। ऐसे व्यक्ति को बन्दर बतलाना कितनी मूर्खता की बात है। सत्य यह है कि उस समय जँगलों में रहने वालों की एक वानर जाति थी। इसी से मूर्ख पण्ड़ितों ने उसे वानर बना दिया। हनुमान, बाली, सुग्रीव, अंगद सभी मनुष्य थे। उनको वानर कहना, हमारी भूल है।

४. महाभारत के समय जब श्री कृष्ण युद्ध रोकने के लिए आखिरी प्रयोग के रूप में दुर्योधन के पास जाते हैं, तब उससे कहते हैं कि ऐ दुर्योधन ! तू सारा राज्य रख, केवल पाँच गाँव पाँचों पाण्डुवों को दे दे। तब दुर्योधन ने कहा कि हे कृष्ण! तुम तो पाँच गाँव की बात कहते हो, मैं तो युद्ध किये बिना सूई की नोंक धरने तक की जमीन भी नहीं दे सकता। तब कृष्ण निराश होकर विदुर के घर आना ही चाहते थे, तब दुर्योधन बोला कि हे कृष्ण! भोजन तो करके जाओ, तब कृष्ण ने जो उत्तर दिया वह एक ऐतिहासिक उत्तर है। कृष्ण ने कहा कि ऐ दुर्योधन ! भोजन दो ही स्थिति में किया जाता है। पहला अति भूख में, दूसरा खिलाने वाले की भावना अच्छी हो। यहाँ दोनों ही बात नहीं है। मुझे न तो अति भूख लगी है और न तुम्हारा मन खिलाने का है, यह कह कर कृष्ण विदुर के घर चले गये।

५. रामायण में विभीषण जिसको उसके बड़े भाई रावण ने नाराज होकर लंका से निकाल दिया था। वह श्री राम की शरण में चला गया। जैसे ही श्री राम ने विभीषण को देखा तो वे सही बात को समझाये कि विभीषण अपने भाई रावण से निकाला हुआ मेरे पास आया है। श्री राम ने विभीषण को देखते ही कहा कि आओ लंकेश ! बैठो !! तब लक्ष्मण ने कहा कि भाई ! आपने विभीषण को लंकेश कैसे कह दिया। अभी तक तो युद्ध शुरू ही नहीं हुआ है। युद्ध में हम जीतेगे या हारेगें कुछ नहीं पता, तब श्री राम ने जो बात नहीं, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। श्री राम ने लक्ष्मण से कहा कि हे लक्ष्मण ! पहली बात तो यह है कि हम सत्य पर हैं, हमारी जीत होनी ही है, तब तो विभिषण को लंकेश बना ही दूँगा। यदि किसी कारण से हार भी गया तो अयोध्या का राज्य तो मेरे पास है, मैं इसे अयोध्या का राज्य देकर अयोध्येश तो बना ही दूँगा। यानि राजा तो बना ही दूँगा। यह है अपने वचनों का पालन करना।

६. महाभारत में यक्ष-युधिष्ठर के संवाद में ऐसा वर्णन आता है कि जब यक्ष ने युधिष्ठर के चारों भाईयों भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव को प्रश्नों के उत्तर न देने के कारण उन्हें मूर्छित कर दिया तब युधिष्ठर ने यक्ष से कहा कि आप मेरे से प्रश्न करो, मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दूँगा। तब यक्ष ने काफी प्रश्न किये, युधिष्ठर ने उसके सभी प्रश्नों के सही उत्तर दे दिये, तब यक्ष ने कहा कि आप अपने एक भाई को जीवित करवा सकते हो तब युधिष्ठर ने नकुल को जीवित करने की कही। तब यक्ष ने कहा कि आप भीम तथा अर्जुन जैसे योद्धाओं को छोड़ कर नकुल को जीवित करने को क्यों कह रहे हो? तब युधिष्ठर ने कहा कि मेरी दो माताएं है। एक कुन्ती दूसरी माद्री। उन्हीं के हम तीन है, मैं भीम और अर्जुन, माद्री के दो हैं नकुल और सहदेव। कुन्ती का एक बेटा जीवित हूं, माद्री का एक बेटा नकुल जीवित हो जाता है, तो दोनों के एक एक बेटा जीवित रह जायेगा। युधिष्ठर की न्यायप्रियता से पक्ष बहुत प्रसन्न हुआ और चारों भाईयों को जीवित कर दिया।

७. छात्रपति शिवा जी के जीवन की एक घटना है कि शिवा जी के 3-4 सैनिको ने घूमते हुए किसी एक मुस्लिम सुन्दर युवती को देखा लिया। उन्होंने यह समझकर कि इस युवती को हम अपने सम्राट शिवा जी को देंगे तो वे हम को काफी पुरस्कार देगा। इस उद्देश्य से उन सैनिकों ने उस सुन्दरी को पकड़कर राज भवन ले गए और शिवा जी से बोले कि महाराज! हम आपके लिए एक बहुत बढ़िया तोहफा लाये है, आप देख कर प्रसन्न हो जाओगे। शिवा जी ने कहा कि दिखाओ, कहाँ है ? तब उन्होंने उस मुस्लिम सुन्दरी को पेश कर दिया। सुन्दरी को देखते ही शिवा जी की आँखें लाल हो गई और कहा कि तुम को मेरे पास रहते कितने वर्ष हो गये, अभी तक तुमने अपने स्वामी को नहीं समझा। बड़े दु:ख का विषय है, खैर! अब आप कुछ गहने जेवर और कपड़े लाओ, यह मेरी बेटी है और अपने पिता जी से मिलने आई है। पिता जी का कर्त्तव्य है कि वह अपनी बेटी को जेवर, कपड़ों से सुसज्जित करके उसको अपने पति के घर भेजे और वैसा ही किया। यह था हमारे देश के राजाओं का चरित्र, इसीलिए भारत "विश्व गुरू" कहलाया।

८. हल्दी घाटी की लड़ाई में जब महाराणा प्रताप मुगलों के सैनिकों से घिर गये थे और बहुत जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त होने वाले थे, उसी समय सरदार भल्ला ने अपने स्वामी महाराणा प्रताप को भारी आपत्ति में घिरा देखकर उसको तुरन्त एक स्कीम समझ में आई कि उसका चेहरा महाराणा से मिलता-जुलता था, उसने भीड़ में घुस कर महाराजा का सिर का मुकुट अपने सिर पर लगा लिया। मुगल सैनिक सरदार भल्ला को महाराणा प्रताप समझ कर सब उसके ऊपर टूट पड़े। महाराणा को निकलने का अवसर मिल गया। वे युद्ध-भूमि छोड़ कर उसकी जान बचाकर जा ही रहे थे, तब दो मुगल सैनिकों ने महाराणा को जाते हुए देख लिया और उसका पीछा करने लगे। शक्ति सिंह जो महाराणा का छोटा भाई था और वह महाराणा से अप्रसन्न होकर अकबर से जा मिला था और इस युद्ध में अकबर की तरफ से लड़ रहा था, उसने मुगल सैनिकों को पीछा करते हुए देखा तो उसके हृदय में अचानक भ्रातृभाव जागा और उन दोनों सैनिकों को मार कर महाराणा से मिलने चला। उधर महाराणा चेतक पर चढ़ा हुआ जा रहा था। तब रास्ते में एक पानी का नाला आ गया। चेतक ने जैसे ही छलांग लगाकर नाला पार किया तो चेतक गिर गया और प्राण दे दिये। महाराणा चेतक के मरने से बहुत दु:खित थे। तब तक अपने छोटे भाई शक्ति सिंह को अपनी ओर आते देखकर तलवार ले कर खड़ा हो गया और कहा कि तुम्हारे लिए तो अब भी काफी हूँ। तब शक्ति सिंह ने कहा भैया ! मैं बेटे को भुलाकर आप

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

जिजीविषा (जीने की इच्छा)

ले. -डॉ. सुभाष वेदालंकार, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

(गतांक से आगे)

दूसरा उपाय है '**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः**' जो कुछ है हमारे पास, वह सब ईश्वर का दिया हुआ है। ऐसा भाव आने पर किसी वस्तु, व्यक्ति के प्रति आसक्ति नहीं होगी। ममत्व का भाव समाप्त होगा, स्पृहा समाप्त होगी। ऐसा करने से शान्ति प्राप्त होगी। गीता कहती है-

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृहः।

निर्ममो निरहंकारः स शान्ति-माधिगच्छति।।

उक्त वाक्य त्याग भाव एवं दानवृत्ति की प्रेरणा देता है, 'जियो और जीने दो, खाओ और खाने दो' की भावना मनुष्य को दीर्घ जीवन देती है। जो अकेला खाता है, दान नहीं देता है, वह मृत्यु का आह्वान करता है। ऋग्वेद का एक मन्त्र विशेष द्रष्टव्य है-

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य।

नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादि।।

अत दान एवं त्याग भावना भी दीर्घ जीवन देती है।

ऊपर उदधृत अथर्ववेद के 8.2.2 मंत्र में दीर्घ जीवन का उपाय निन्दित कर्मों को त्याग को बताया गया है। **मागृधः कस्य स्विद्धनम्** किसी के धन का लालच मत करो। इस उपदेश का आचरण करने से दीर्घायु प्राप्त होती है, जिजीविषा बढ़ती है। लोभ को पाप का कारण कहा गया है, '**लोभः पापस्य कारणम्**' गीता में तीन नरक के द्वार बताये गये हैं, उनमें से एक द्वार लोभ है। पाप कार्य से केवल दुःख और अशान्ति बढ़ती है जो आयु को क्षीण करती है। नरक का अर्थ है-'**नरकं न्यरकं भवति, नरकं नीचैर्गमनम्, नास्मिन् रमणं स्थानं विद्यते।**' निरुक्त के अनुसार अधः पतन की ओर जाना ही नरक है। नरकगामी व्यक्ति वस्तुतः मृत्यु को आमन्त्रण देता है।

वेद में '**यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म**' कहा गया है। यज्ञ '**इदन्न मम**' की भावना भरता है। मन को शान्ति देता है, शान्ति प्राप्त होने पर जिजीविषा बढ़ती है। अशान्त व्यक्ति आत्महत्या की भी सोचता है। पञ्च महायज्ञ, गीता के आठ प्रकार के यज्ञ ज्ञान यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, दान यज्ञ, द्रव्य यज्ञ, तपो यज्ञ, देव यज्ञ, सभी शान्ति को देने वाले अत एव आयुवर्धक हैं। जिजीविषा का भाव बढ़ाते हैं। इसीलिये वेद में कहा गया है '**आयुः यज्ञेन कल्पताम्**'। यज्ञ की समाप्ति पर एक मन्त्र का पाठ किया जाता है। तदनुसार जो वेद का पाठ करता है, वेद रूपी माता की स्तुति करता है, उसकी आयु, कीर्ति और समृद्धि बढ़ती है-

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मर्चसम्, मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय का तीसरा मन्त्र बहुत प्रसद्धि है-

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।

तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

यहां आत्महनो जनाः महत्वपूर्ण पद है। इसके अनेक अर्थ हैं। (1) जो आत्म हत्या करते हैं। (2) जो जीवन संग्राम से भागते हैं। (3) जो ईश्वर को नहीं मानते, नहीं जानते। (4) जो कर्म नहीं करते। (5) जो त्यागपूर्ण जीवन नहीं बिताते। वे सब आत्महनः, आत्मघाती हैं और जो आत्मा की अन्तरात्मा की पुकार को नहीं सुनते, उसके विरुद्ध आचरण करते हैं, वे भी आत्महनः आत्मघाती हैं। ऐसे लोग मूर्ख हैं, विपरीत गति वाले हैं। वे मृत्यु के उपरान्त अज्ञानान्धकार से भरी योनियों को प्राप्त होते हैं। कुत्ता, सूअर, सर्प आदि की योनि को प्राप्त कर आजीवन दुत्कारे जाते हैं। ऐसे आत्मघात से बचना चाहिए। जो आत्मघात से दूर रहकर सत्कार्य करते हैं, परमात्मा को जानते हैं, उसमें रमण करते हैं, वे मृत्यु को पार करते हैं, '**तमेव विदित्वाति-मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।**'

जिजीविषु (जीने की चाह रखने वाला व्यक्ति) तभी जीवन की इच्छा कर सकता है जब वह स्वस्थ रहे। कालिदास का कथन है '**शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्**' शरीर ही धर्म का प्रथम साधन है, शरीर रक्षा, श्रेष्ठ स्वास्थ्य की, दीर्घ जीवन की कुंजी है। आयुर्वेद का वाक्य प्रसिद्ध है-

'**आरोग्यं परमं सुखम्**' हिन्दी कवि का कथन है '**पहला सुख निरोगी काया**। शारीरिक स्वास्थ्य केवल प्रसन्न रहने से, योगासन के अभ्यास से तथा भ्रमण, व्यायाम आदि से प्राप्त होता है। प्राणायाम के विषय में मनु लिखते हैं-

दह्यान्ते ध्यायमानानां धातूनां हि यथा मलाः।

तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।

प्राणायाम से इन्द्रियों के दोषों का नाश होकर, श्रेष्ठ स्वास्थ्य और उससे दीर्घायु मिलती है। इसीलिये अथर्ववेद में प्राण को नमस्कार किया गया है-

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।

यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम।।

प्राण यदि वश में आ जाये तो मृत्यु पर विजय प्राप्त हो जाती है।

अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह वै रमन्ताम्।

-अथर्ववेद

योग भी स्वास्थ्य का रक्षक एवं वर्धक है। गीता में कहा गया है-समत्त्वं योग उच्चते। सुख-दुःख, हानि-लाभ, जय-पराजय में समान रहना ही योग है। गीता में लिखा है-

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभा-लाभौजयाजयौ ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

द्वन्द्वों में समत्त्व भाव रखने से पाप से बचा जा सकता है, पाप से शून्य व्यक्ति शान्त रहता है, शान्ति युक्त व्यक्ति में जिजीविषा का संचार होता है।

योग की दूसरी परिभाषा 'योगः कर्मसु कौशलम्' की गई है। जो करणीय कार्यों में कुशल होता है, वह योगी कहलाता है। जो निरन्तर कार्य करता है, परिश्रम करता है वह योगी होता है। वह थकता नहीं, स्वस्थ रहता है, अतः वही दीर्घ काल तक जी सकता है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है-'चरन् वे मधुविदन्ति' जो गति करता है, कर्म करता है, वही सर्वविध आनन्द प्राप्त करता है। जो आनन्द पाता है, वही शान्ति प्राप्त करता है और जो शान्ति प्राप्त करता है उसी में जिजीविषा दीर्घकाल तक जीने की इच्छा जागती है।

चित्त की वृत्तियों के निरोध को भी योग कहा गया है। योग दर्शन में कहा गया-'**योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः।**' प्रत्येक मनुष्य में सुख-दुःखात्मक वृत्तियां छिपी रहती हैं। जो इन वृत्तियों पर विजय पा लेता है वह योगी होता है, वही समस्त शोकों से तर जाता है '**शोकं तरति योगवित्**' प्रसिद्ध भी है। ऐसा व्यक्ति ही दीर्घायु बन सकता है, जिजीविषु बन सकता है।

स्वस्तिवाचन के मन्त्रों में एक अत्यन्त प्रसिद्ध मंत्र आता है-

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।

अर्थात् दीर्घ आयु प्राप्त करने के लिए कानों से केवल अच्छा ही सुनें, आंखों से केवल अच्छा ही देखें, सदैव यजनशील बनें। कान, नाक, आंख आदि की रक्षा के लिए अनेक उपाय विविध शास्त्रों में दिये गये हैं। अंगों के स्वास्थ्य से शरीर स्वस्थ होता है। सन्ध्या के मन्त्रों में आंखों का स्पर्श किया जाता है। अग्निहोत्र के प्रारम्भ में भी अंग स्पर्श करके '**ओं अरिष्टानि में अंगानि तनुस्तन्वा में सह सन्तु**' मन्त्र का उच्चारण कर स्वास्थ्य की कामना की जाती है। वेदों के अनभ्यास दुराचार का आचरण, आलस्य और अन्न दोष से भी मृत्यु आ घेरती है। अतः कहा गया है-

अनभ्यासेन वेदानामाचारस्य च वर्जनात्।

आलस्यादन्न दोषाच्च मृत्युविप्रान् जिघांसति।।

-मनु. 5-4

अतः जिजीविषा के लिये आवश्यक है कि वेदमार्ग का अनुसरण किया जाये, सदाचार का पालन किया जाये, आलस्य का त्याग किया जाये तथा अन्न से उत्पन्न दोषों से बचा जाये। अन्न भक्षण के प्रसंग में आयुर्वेद शास्त्र में कुछ नियम हैं-'ऋतभुक्, हितभुक् मितभुक्' अर्थात् ऋतु के अनुकूल पदार्थ खाने चाहियें, हितकारी खाद्य खाना चाहिये, भूख से कुछ कम खाना चाहिये। गीता के शब्दों में कहा जाये तो 'जिसका आहार, विहार और चेष्टायें युक्त अर्थात् ठीक हैं, युक्तिसंगत हैं, वह सब दुःखों से बच जाता है। शीघ्र सोना, ब्राह्ममुहूर्त में जागना, ठीक समय पर खाना पीना, समुचित व्यायाम, कर्तव्यपालन करना, समुचित व्यवहार और चेष्टायें करना, ये सब जिजीविषा के कारण बनते हैं।

अभिवादनशील तथा सदैव वृद्धों की सेवा में तत्पर व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु-विद्या यशो वलम्।।

इस प्रकार जिजीविषा के लिए निराशा को भगाकर आशा से जुड़ जाना, केवल सत्कार्य करना, प्रसन्नता के द्वारा, योगव्यायाम के द्वारा शरीर को स्वस्थ रखना। सदैव आसक्तिहीन होकर समुचित चेष्टायें करना आदि कार्य मनुष्य को अधिक से जीने के लिये शक्ति देते हैं। उसमें जिजीविषा का संचार करते हैं।

www.thearyasamaj.org

परितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका का द्वारा आयोजित ''वैदिक ज्ञान परीक्षा एवं रंग भरो प्रतियोगिता-2016'' का परितोषिक वितरण समारोह आर्य समाज मन्दिर फाजिलका में 7 फरवरी, 2017 को अत्यन्त हर्षोल्लास से डॉ० नवदीप जसूजा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्यातिथि के रूप में श्री पूरन चन्द जसूजा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कृष्ण लाल जसूजा एवं श्री अरुण आर्य ने अपने-अपने आसन को सुशोभित किया। परीक्षा संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री ने बताया कि वैदिक ज्ञान परीक्षा प्राइमरी, मिडल, मैट्रिक, सेकण्डरी एवं कॉलेज स्तरीय पांच ग्रुपों में आयोजित की गई। जिसमें तीन कॉलेज तथा 19 स्कूलों के 1300 छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए।

रंग भरो प्रतियोगिता में 14 स्कूलों के 1100 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। यह प्रतियोगिता नर्सरी, एल के जी, यू के जी, पहली और दूसरी कक्षा तक पांच ग्रुपों में सम्पन्न हुई। सभी ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त तथा प्रोत्साहित छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। रंग भरो प्रतियोगिता में सर्वाधिसंख्य सहभागिता के आधार पर सर्वहितकारी विद्या मन्दिर ने 500 बच्चे सम्मिलित करके ''सर्वोच्चतम सहभागिता अलंकरण'' और डी. ए. वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल ने 200 बच्चे सम्मिलित करके ''सर्वोच्च सहभागिता अलंकरण'' प्राप्त किया। परीक्षा में सहयोगी शिक्षकों, परीक्षकों, पर्यवेक्षकों को वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

शास्त्री जी के अनुसार परीक्षा का मुख्य उद्देश्य धर्म के यथार्थ स्वरूप से परिचय, नैतिक-चारित्रिक विकास, राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं दृढ़ विश्वास, अन्धविश्वास-रूढ़िवाद-पाखण्ड-छूआछूत-भेदभाव सदृश कुरीतियों के प्रति जागृति उत्पन्न करना तथा धर्म के नाम पर फैली भ्रान्त धारणाओं के प्रति वैज्ञानिक सोच जागृत करना है।

समारोह के अध्यक्ष डॉ० नवदीप जसूजा, मुख्यातिथि श्री पूरन चन्द जसूजा एवं विशिष्ट अतिथि श्री कृष्णलाल जसूजा तथा श्री अरुण आर्य ने सभी छात्रों के उज्वल भविष्य की कामना की। इन सभी अतिथियों को परिषद् की ओर से सम्मानार्थ स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए समारोह की शोभा बढ़ाने हेतु आभार व्यक्त किया गया। अन्त में शास्त्री जी ने सभी छात्रों, शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों का सहयोगार्थ हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-वेदप्रकाश शास्त्री फाजिलका

'युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 193वाँ जन्मोत्सव'

दिनांक 21-02-2017 तदनुसार फाल्गुन बदी दशमी विक्रम सम्वत् 2073 को आर्यसमाज नईमण्डी, मुजफ्फरनगर के सभागार में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 193वें जन्मदिवस पर वेदमन्त्रों से देवयज्ञ हुआ। उपस्थित सब स्त्री-पुरुषों ने यज्ञ में आहुति प्रदान की व महर्षि की राष्ट्र के लिए की गई उत्कृष्ट सेवाओं को याद किया। इस अवसर पर सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार को समर्पित विद्वान सन्यासी स्वामी सत्यवेश सरस्वती, स्वामी शिवानन्द योगतीर्थ, स्वामी भजनानन्द व स्वामी योगानन्द सरस्वती को अंगवस्त्र तथा सम्मानराशि प्रदान कर आर्यसमाज व आर्यरत्न आचार्य गुरूदत्त आर्य ने सम्मानित किया। श्री आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द वेदों के पुनरूद्धारक, स्वतन्त्रता प्रेरक तथा महान समाज सुधारक थे। स्वामी सत्यवेश जी ने बताया कि वेदज्ञान के अभाव में व्याप्त अन्ध परम्पराओं, अविद्या, पाखण्ड का ऋषि दयानन्द ने देश से उन्मूलन किया। स्वामी शिवानन्द योगतीर्थ ने बताया कि महर्षि ने स्त्री तथा शूद्रों को पढ़ने का विशेषत: वेद व वैदिक साहित्य पढ़ने का अधिकार पतिपादित किया। उन्होंने छुआछूत को देश के लिए घातक बताया। स्वामी भजनानन्द ने कहा कि संसार का सब ज्ञान-विज्ञान वेदों में निहित हैं महर्षि ने यज्ञों को अपनाने व गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को प्रचलित करने का सन्देश दृढ़ता के साथ दिया। स्वामी योगानन्द ने बताया कि महर्षि दयानन्द की स्वराज्य के पक्ष में की गई निर्भीक उद्घोषणा के बाद देश ने करवट ली।

-आर. पी. शर्मा मंत्री आर्य समाज, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर का गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाउन जालन्धर में माघ महीने में चलने वाला गायत्री महायज्ञ दिनांक 12 फरवरी 2017 रविवार को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ होकर यह गायत्री महायज्ञ बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ एक महीने चला और इस महायज्ञ में बहनों तथा भाईयों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। लगातार एक महीने तक बाहर से आए विद्वानों के प्रवचन होते रहे। इस कार्यक्रम की यह विशेषता है कि बाहर से भजनोपदेशकों को नहीं बुलाया जाता और स्त्री समाज की बहनों के द्वारा भजन गाए जाते हैं। इस वर्ष 14 से 20 जनवरी तक आचार्य महावीर मुमुक्षु मुरादाबाद , 21 से 23 जनवरी तक आचार्य सुरेश शास्त्री जालन्धर 24 से 27 जनवरी तक आचार्य शिवदत्त पाण्डे उत्तर प्रदेश, 29 जनवरी से 4 फरवरी तक आचार्य राजू वैज्ञानिक दिल्ली, 7 फरवरी से 12 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माता सत्याप्रिया जी सुन्दरनगर वालों के प्रवचन होते रहे। सभी विद्वानों ने गायत्री महामन्त्र, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ एवं वेदों के ऊपर चर्चा करते हुए सभी को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी की अध्यक्षता में चलता रहा जिसमें सभी बहनों ने अपना तन-मन और धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

दिनांक 12 फरवरी 2017 रविवार को गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति 31 हवनकुण्ड़ों पर की गई। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री एवं पं. बुद्धदेव ने मन्त्रोच्चारण करते हुए यज्ञ को सम्पन्न करवाया। एक महीना लगातार चलने वाले इस यज्ञ में लगभग 200 परिवारों ने यजमान बनकर गायत्री महायज्ञ में आहुतियां ड़ाली। महीना भर चलने वाले यज्ञ में बनने वाले सभी यजमानों ने पूर्णाहुति के अवसर पर गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति ड़ालकर यज्ञ को पूर्ण किया। यज्ञ के ब्रह्मा तथा अन्य विद्वानों के द्वारा यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य समाज के सत्संग हाल में शुरू हुआ। श्री राजेश अमर प्रेमी तथा सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन ने अपने प्रभु भक्ति के भजनों के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। दमयन्ती सेठी ने हे गायत्री माता तुझको लाखों प्रणाम और रजनी सेठी ने धन्यवाद प्रभु तेरा कैसे करूं, मेरे पास ऐसी वाणी नहीं, भजन सुनाकर गायत्री महिमा का वर्णन किया। कार्यक्रम के शुभारम्भ अवसर पर सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया गया। स्त्री आर्य समाज की मन्त्राणी श्रीमती प्रोमिला अरोड़ा जी ने स्त्री आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। महात्मा चैतन्यमुनि जी ने अपने आशीर्वचन में सभी लोगों को वेद के बताए मार्ग पर चलते हुए ईश्वर की सच्ची पूजा करने का सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि हमें ईश्वर के ऊपर आस्था रखते हुए हमेशा निस्वार्थ भाव से कर्म करना चाहिए। श्रीमती नीरू कपूर ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मंच का संचालन किया। इस समारोह में प्रिंसिपल विनोद कुमार, श्री चन्द्रमोहन जी वीर प्रताप, श्रीमती बिमला मित्तल को स्त्री आर्य समाज की अधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। स्त्री आर्य समाज के प्रति योगदान एवं समर्पण को देखते हुए श्रीमती सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज एवं उनके परिवार को सम्मानित किया गया। स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत ने आए हुए सभी गणमान्य अतिथियों का परिचय दिया तथा उन्हें पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि पूरा मास चले इस कार्यक्रम में उन्हें सभी की ओर से पूर्ण सहयोग मिला है। उन्होंने सभी के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर आर्य समाज मॉडल टाऊन के प्रधान श्री अरविन्द घई, मन्त्री श्री अजय महाजन, श्रीमती राजमोहिनी सोंधी, श्रीमती ज्योति शर्मा, डॉ. सुषमा चोपड़ा तथा बहुत से गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। सारा सत्संग हाल खचाखच भरा हुआ था।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ 2 का शेष-सुगृहिणी : परिवार का....

सहजीवन में असन्तोष उत्पन्न करने वाले और वैचारिक मतभेद आते ही रहते हैं, हाँ मतभेद भले ही हों मनभेद नहीं होना चाहिए। ऐसी स्थिति को विचार-विनिमय, सहिष्णुता, विश्वास और उदारचित्तता से संभाला जा सकता है। आत्मीयता का यह गहरा स्रोत ही एक 'सुगृहिणी' की सफलता का आधार है जो कि उसके परिवार का सर्वोत्तम सौभाग्य भी है। गृहिणी अपने पति की पत्नी ही नहीं होती वरन् उसे पुत्रवधू, जेठानी, देवरानी, भावज, ताई, चाची, माता, मासी, सास, दादी, नानी भी बनना पड़ता है। इन समस्त सम्बन्धों की गरिमा से दृढ़ सबका स्नेह, सम्मान और सहयोग पाकर उस स्थान पर प्रतिष्ठित हो सकती है जहां पहुंचने पर कोई भी विचारशील नारी अपने आप को 'गृहलक्ष्मी' या 'गृहिणी गृहमुच्यते' कहलवाने का अधिकार पा लेती है। एक बात और भी है जो बड़े महत्त्व की है। वह यह कि यदि सुगृहिणी 'ब्रह्मभ्य: कृणुता प्रियम्' (अथर्ववेद 13.3.26) वेद वचन के अनुसार घर के बड़े बुजुर्गों से सत्कारपूर्वक और शिष्टाचार-पूर्वक व्यवहार करने वाली हो तो वह 'मही' (यजुर्वेद 8.43) अर्थात् अति पूजनीया बन जाती है। किसी शायर ने भी खूब कहा है-

बुजुर्गों से रिश्ते रखना, क्योंकि पत्ते पेड़ों पर ही हरे रहते हैं।

वास्तव में ऐसी विलक्षण, नम्रता, त्याग परिश्रम और सुसंस्कारों से ही आती है। सामान्यत: भी जीवन में सम्मान पाने और कोई आदर्श स्थापित करने के लिये सबके प्रति प्यार, स्नेह, शुभाशीष और आत्मीयता के भाव रखना अनिवार्य है। अपना चरित अपेक्षाकृत अधिक उज्ज्वल बनाने के लिए दृढ़ संकल्प और आवश्यक साहस व शक्ति का संचय करना होता है। उत्कृष्टता के मूल्य पर ही व्यक्ति दूसरों की श्रद्धा का पात्र बन सकता है। महान् दार्शनिक सिसरो का कहना है कि 'सम्मान सद्गुणों का पुरस्कार होता है।' और श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनना ही महान् सौभाग्य है। अत: गृहस्थरूपी देवालय की देवी गृहिणी को 'सुगृहिणी' बनकर ही घर परिवार के सौभाग्य को सदैव जागृत रखना चाहिए।

पृष्ठ 4 का शेष-भारत के गौरवशाली...

से प्रेम से मिलने आया हूँ तब दोनों भाईयों का राम-भारत जैसे मिलाप हुआ और चेतक का वैदिक रीति से दाह-संस्कार करके शक्ति सिंह के घोड़ पर दोनों चले गये। वाह रे सरदार भल्ला सिंह का बलिदान ! तूने महाराणा प्रताप के प्राण तो बचा ही दिये साथ ही दो बिछुड़े भाईयों को भी मिला दिया।

९. महात्मा-चाणक्य, गुप्त राज्य का महामन्त्री था। यदि वे चाहते तो बड़े से बड़े महल में रह सकते थे, परन्तु वह जंगल में एक कुटिया बनाकर रहते थे और नित्य संन्ध्या, हवन करके राज्य का कार्य देखते थे। बड़े-बड़े राजाओं के प्रतिनिधि, चाणक्य से वहीं कुटिया में जाकर मिलते थे और अपनी-अपनी समस्याओं का समाधान निकलवाते थे। महात्मा चाणक्य राज्य का एक पैसा भी अपने काम में नहीं लेते थे। दीपक और तेल भी अपना अलग रखते थे। जब राज्य का काम होता था तब राज्य के पैसों से खरीदा दीपक व तेल का प्रयोग करते थे और जब अपना कोई व्यक्तिगत काम करते थे तो अपने पैसों से खरीदा दीपक वेतन का प्रयोग करते थे। राज्य से जो वेतन पाते थे उसी में काम चलाते थे। यह था चाणक्य का त्यागमय व स्वच्छ तथा पवित्र जीवन। ऐसे ही व्यक्ति देश की उन्नति व समृद्धि कह सकते हैं। आज के स्वार्थी व रिश्वतखोर मन्त्रियों को चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

१०. महात्मा हंसराज भी महात्मा चाणक्य की भाँति एक सच्चे, ईमानदार, त्यागी, तपस्वी, सेवा-भावी, कर्त्तव्य पारायण व एक उदार हृदय के व्यक्ति थे। जिन्होंने अपने पूरे कार्यकाल में D.A.V संस्था की प्रधान पद पर रहते हुए बिना वेतन लिए नि:शुल्क सेवा की। वे अपने भाई मुल्ख राज से केवल चालीस रूपये महीना लेकर अपना गृहस्थ चलाते थे।

शोक संदेश

आप सभी को दुखी हृदय से सूचित किया जाता है कि आर्य समाज मंदिर आर्य समाज चौक नाभा के सरपरस्त एवम् कर्मठ पूर्व महामंत्री श्री ज्ञानचंद आर्य जी 87 वर्ष की अवस्था में दिनांक 3-3-2017 दिन बुधवार को अपनी संसारिक यात्रा पूर्ण करके प्रभु चरणों में जा विराजे हैं। आदरणीय श्री ज्ञानचंद आर्य जी का जीवन आर्य समाज को सदैव समर्पित रहा उनके जाने से आर्य समाज नाभा को बहुत क्षति हुई है। आर्य समाज नाभा परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति और सद्गति की प्रार्थना करता है।

ऋषिबोधोत्सव मनाया

केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के तत्वावधान में ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य महा सम्मेलन रविवार 26 फरवरी 2017 को प्रधान श्री दर्शन कुमार जी की अध्यक्षता में आर्य समाज शक्ति नगर, अमृतसर के प्रांगण में बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से दयानन्द मठ दीना नगर से पधारे ब्रह्मचारीयों ने करवाया। श्री इन्द्रपाल आर्ष, गौरव तलवाड़ तथा सोनो कुमार ने प्रभु भक्ति तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की महिमा के भजनों का गुणगान कर सभी का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के मुख्या वक्ता महात्मा चैतन्य मुनि जी और स्वामी सूर्यदेव जी विशेष रूप से पधारे। उन्होंने अपने ओजस्वी प्रवचन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी समाज, देश, संस्कृति और धर्म को अतीत के कई आर्य किए। उनका सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने आर्य समाज के छठे नियम ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना'' इस की सविस्तार व्याख्या की कार्यक्रम में अमृतसर को उसकी शिक्षण संस्थाओं के प्रि० श्री जे. पी. शूर प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनधि उप सभा पंजाब, प्रि० डा० नीलम कामरा मंत्राणी, प्रि० नीरा शर्मा, प्रि० अजय बेरी, के अतिरिक्त केन्द्रीय आर्य सभा के मंत्री श्री राकेश मेहरा, मुकेश आनन्द, हीरा लाल कंधारी, जुगल किशोर आहूजा, धर्मवीर, दीपक महाजन, अतुल मेहरा के अतिरिक्त अमृतसर की समस्त आर्य समाज के अधिकारी तथा गण्यमान व्यक्ति शामिल थे। शान्ति पाठ के बाद ऋषि लंगर वितरण किया गया।

-राकेश मेहरा महामन्त्री

आर्य समाज खरड़ में महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषिबोधोत्सव मनाया

आज दिनांक 23 फरवरी 2017 दिन वीरवार के आर्य समाज खरड़ द्वारा आर्य कन्या विद्यालय के प्रांगण में महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषिबोधोत्सव बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया। हवन यज्ञ के बाद श्री दिनेश पथिक जी अमृतसर वालों ने देश भक्ति के गीत एवं भजन सुनाकर सबको आनान्दित किया। उस अवसर पर आर्य संस्थाओं के विद्यार्थिओं के इलावा टैगोर निकेतन स्कूल के प्रिंसीपल की जितेन्द्र गुप्ता जी विद्यार्थियों के साथ सम्मिलित हुए। प्रधान श्री विश्व बन्धु आर्य जी ने अपने उद्बोधन में महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला। सचिव एम. पी. अरोड़ा एवं बहन प्रेम लता जी ने भजन प्रस्तुत किए। आज के यजमान की विशनु मित्तल जी सपरिवार एवं एडवोकेट तारा चन्द जी चेयरमैन कन्या विद्यालय, श्री राजेन्द्र अरोड़ा, श्री तीरथ राम, विजय अग्रवाल, विशाल सिंगला, विजय धवन, आदि शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे। ऋषि लंगर एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-एम. पी. अरोड़ा मन्त्री आर्य समाज खरड़

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी

अमरत्व की घोषणा

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः। आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥

-ऋ. १०।१८।२; अथर्व० १२।२।३०

ऋषिः-**सङ्कुसको यामायनः॥** देवता-**मृत्युः॥** छन्दः-**त्रिष्टुप्॥**

विनय-संसार के प्रत्येक प्राणी पर मृत्यु ने पाँव रखा हुआ है। जिस दिन उसकी इच्छा होती है। उस दिन वह उस पाँव को दबाकर प्राणी को कुचल डालती है, समाप्त कर देती है, पर, हे नरतनधारी मनुष्यो ? तुममें वह शक्ति है जिससे कि तुम मृत्यु के उस पैर को धकेल कर अमर बन सकते हो। इस संसार में तुम मरे हुओं की तरह न रहकर, न सड़कर, अमर पुत्रों की तरह दृढ़ता से चलो ; शुद्ध, पूत और यज्ञिय बन जाओ। ऐसे बनने से तुममें वह आत्मशक्ति जग जाएगी कि तुम उस मृत्यु के पैर को धकेल फेंकोगे। ठीक आहार, व्यायाम, तप आदि द्वारा शरीर को शुद्ध रखो और अन्दर सत्त्वशुद्धि, सौमनस्य आदि लाकर अन्तः करण को पवित्र रखो ; और फिर इस शरीर और मन से यज्ञिय कर्म ही करते जाओ ; इससे तुम निःसन्देह अमर निकल आओगे। यह सच है कि यज्ञिय जीवन से मृत्यु मारी जाती है, तब मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक चलने वाला यज्ञ हो जाता है, तब वह मनुष्य पूर्ण सौ वर्ष की दीर्घ=विस्तृत आयु को यज्ञरूप में धारण करता है। हम मरे हुए मनुष्य तो आयु को 'धारण' नहीं कर रहे हैं, किन्तु आयु के बोझ को जैसे-तैसे ढो रहे हैं। जब शरीर को आत्मा धारे हुए होता है तो आत्मा शरीर को पूर्ण सौ वर्ष तक स्वस्थ चलने की-जीवन-यज्ञ को सौ वर्ष तक अखण्डित चलने की-आज्ञा देता है और इस जीवन में प्रजा को सृजने द्वारा तथा धन के बढ़ाने द्वारा अपनी विकास की इच्छा को परितृप्त करके यज्ञ को पूर्ण करता है। आत्मशक्ति का प्रकाश करने के लिए ही आत्मा शरीर को धारण करता है, अतः शरीर पाकर इस जगत् में कुछ-न-कुछ उपयोगी वस्तु का प्रजनन करना, सृजन (Create) करना तथा जगत् के सच्चे ऐश्वर्य को (धन को) बढ़ा जाना आवश्यक है। संसार में आई सब महान् आत्माएँ इस संसार में उच्च ऐश्वर्य को बढ़ाकर जाती हैं। हे मनुष्यो? उठो, मृत्युमय जीवन छोड़ो, शुद्ध, पूत तथा यज्ञिय बनो और मृत्यु के पैर को परे हटाकर अपने अमरत्व की घोषणा कर दो।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। **-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

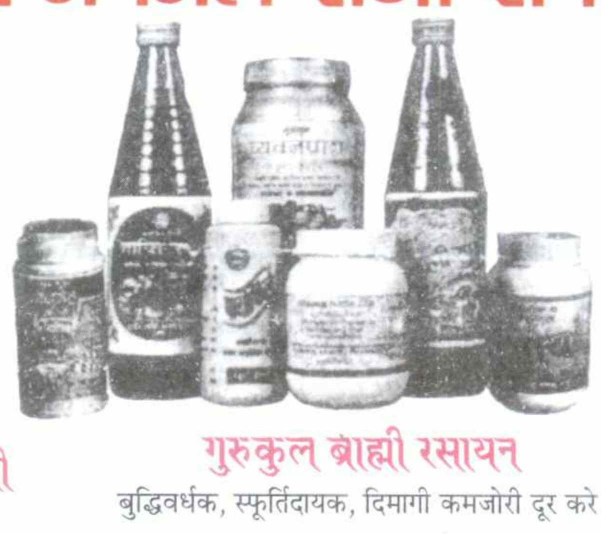

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।